लेखक : श्री डॉ. शिवपूजनसिंह कुशवाह, एम. ए.

मनुस्मृति - पर्यवेक्षण

स्वामी समर्पणानन्दजी सरस्वती (पं. बुद्धदेवजी 'विद्यालङ्कार' विद्यामार्तण्ड):– 'मन हमारे अध्यात्म राज्यमें सदा यज्ञ करता चला आया है। सबसे पहला यज्ञका नमूना यही है। जिस प्रकार मन ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियोंको ठीक चलाता है तब कार्य सफल होते हैं। इसीका अनुकरण करके संसारके लोग भी एक मननशील विद्वान्को आगे करके उसके पीछे चलते हैं। इसीलिए कहा मनुष्यवत् क्योंकि यज्ञ वास्तवमें तो मनका ही कर्म है इसीलिए कहा 'मनुष्यवत्' मनु देखो पृ. ५९।७। '[१७]

यहाँ स्वामी समर्पणानन्दजी महाराजने भी 'मनु' का अर्थ 'मननशील विद्वान्' किया है जो समीचीन है।

'मनुः मननशक्तिः' ऐसा श्री सायणाचार्यने 'ताण्ड्य ब्रा. ३।३।८।३' परके भाष्यमें लिखा है।

जो मननशक्तिसे युक्त है वह 'मनु' है। यह भी यौगिक अर्थ हुआ।

मनुस्मृतिकी अन्तःसाक्षी:–

एतमेके वदन्त्यग्निं मनुमन्ये प्रजापतिम्।
इन्द्रमेके परे प्राणमपरे ब्रह्म शाश्वतम्॥
(मनु. १२।१२३)

पं. कुल्लूक भट्ट:- 'एतं च परमात्मानमग्निरूपेणैके याज्ञिका उपासते। तथा 'तमेकमग्निम्' इत्यध्वर्यव उपासते। अन्ये पुनः स्रष्टृत्वात्स्रष्ट्रारूप प्रजापतिरूपतयोपासते।'

हिन्दी अनुवाद:– 'इस (परम पुरुष परमात्मा) को कुछ लोग (याज्ञिक-अध्वर्यु) अग्नि, कुछ लोग (सृष्टि-कर्ता) प्रजापति मनु, कुछ लोग (ऐश्वर्य सम्पन्न होनेसे) इन्द्र, कुछ लोग प्राण तथा कुछ लोग शाश्वत (सनातन अर्थात् नित्य) ब्रह्म कहते हैं।'[१८]

अब 'मनु' व्यक्ति विशेषके रूपमें:–

तैत्तिरीय संहिता (१।९४) में मिलता है– 'मनुः पुत्रेभ्यो दायंव्यभजत्' अर्थात्– 'मनु ने अपने पुत्रोंको अपनी सम्पत्ति दी।'

भगवद्गीता (४।१) में 'इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्। विवस्वान् मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्' वैवस्वत मनु तथा उनके पुत्र इक्ष्वाकुका नामोल्लेख है।

पं. भगवद्दत्तजी बी- ए. का विचार:– 'वैवस्वत मनु– इसका नाम शतपथ ब्राह्मण १३।४।३।३ में स्मरण किया गया है + अर्थशास्त्रकार कौटल्य भी इसे मनुष्योंका प्रथम राजा स्वीकार करता है × इसके आगे वह लिखता है कि प्रजाने इसे कर देना आरम्भ किया। मनु ही दण्ड आदिकी व्यवस्थाका प्रथम चलानेवाला था।'[१९]

यास्काचार्यजी और मनु:—

दायभागके विषयमें यास्क ऋषिने मनुजीको प्रमाण माना है:—

अविशेषेण पुत्राणां दायो भवति धर्मतः।
मिथुनानां विसर्गादौ मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत्॥
(निरुक्त ३।४)

---

१७ 'शतपथ ब्राह्मण भाष्य [प्रथम काण्ड], पृष्ठ २४४ [संवत् २०३० वि. में दयानन्द संस्थान,, १५९७ हरध्यान सिंह मार्ग, नई दिल्ली– ५ द्वारा प्रकाशित]

१८ 'मनुस्मृतिः 'मन्वर्थ मुक्तावली टीका सहित' मणिप्रभा 'हिन्दी व्याख्यासंहित, (सम्पादक पं. गोपाल शास्त्री नेने) पृष्ठ ६५८ (संवत् २०२६ वि. चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, द्वितीय संस्करण)

+ 'मनुर्वैवस्वतोराजेत्याह।'

× 'मात्स्यन्यायाभिभूताः प्रजा मनुवैवस्वतं राजानं चक्रिरे। आदि राजो मनुरिव प्रजानां परिरक्षिता।'

१९ 'भारतवर्षका इतिहास' (आदि युगसे गुप्त–साम्राज्यके अन्ततक) पृष्ठ ३३ (सन् १९४० ई. में लेखक द्वारा वैदिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट माडेल टाउन, लाहौर द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण).

पं. चन्द्रमणिजी 'विद्यालंकार' पालीरत्न:– 'बिना किसी भेदके साम.न्यत: स्त्री-पुत्र 'दोनों पुत्रोंका धर्मानुसार दायभाग होता है– यह सृष्टिकी आदिमें स्वायम्भुव मनुने कहा है।'[20]

पुन:– 'स्वायम्भुव मनु सृष्टिके आदिमें पहला मनु हुआ है, उसके बाद स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष यह पांच मनु और हो गये हैं, सातवां मनु वैवस्वत था जिसके नामसे मनुस्मृति अत्यन्त प्रसिद्ध है। उस सातवें मनुने भी अपने स्मृति-ग्रन्थमें 'यथैवात्मा तथा पुत्र: पुत्रेन दुहिता सम:। तस्यामात्मनि तिष्ठन्त्यां कथमन्यो धनं हरेत्' (९।१३०) यह वचन कहा है'[21]

इसी प्रकार मनुस्मृति अ. ९ श्लोक १३६, १३९ में भी पोता व नातीमें भेद नहीं किया गया है। दोनों ही दाय भागके अधिकारी हैं।

पं. भगवद्दत्तजी बी. ए.– 'अविशेषसे = बिना भेदभावके पुत्रोंका = बालक, बालिकाका दाय [में भाग] होता है, धर्मानुसार बालक, बालिकाके जोडेका। (वि + सर्गादौ) अवान्तर प्रलयके पश्चात् युगके आदिमें मनु [जो] स्वयम्भू= ब्रह्माका पुत्र, बोला।

भाष्य– स्वायम्भुव मनु सृष्टिके आदिमें भी था। और वही नाम बार बार रखा जानेसे विसर्गके आदिमें भी इस नामका ऋषि हुआ। विसर्गका अर्थ है। अवान्तर प्रलयके पश्चात्। उसका धर्मशास्त्र अति विशाल था। वह लोक भाषामें, पर पाणिनिसे बहुत पूर्वकी लोकभाषामें था। वेदके साथ ही व्यावहारिकी भाषाका प्रयोग होने लगा था।...

मनुके उसी विशाल शास्त्रका अतिसंक्षिप्त और कतिपय प्रक्षेपवाला यह वर्तमान भृगुप्रोक्त शास्त्र है। इसको ईसाके आसपासकी रचना कहना। इतिहास विरुद्ध है। यास्कने परम आदर भावसे यह श्लोक उद्धृत किया है।'[22]

आचार्य पं. श्रीभगीरथ शास्त्रकृत '(मिथुनानाम् पुत्राणाम्) स्त्री पुरुष दोनोंही प्रकारके अपत्योंका (अविशेषेण) समान रूपसे (धर्मत:) धर्मानुसार (दाय: भवति) दाय है दोनोंही अधिकारी है। यह बात (विसर्गादौ) सृष्ट्यारम्भमें (स्वायम्भुव: मनु:) मनुने (अब्रवीत्) कही है।'[23]

अत: यास्ककी दृष्टिमें 'मनुस्मृति' प्रामाणिक है इसलिए उन्होंने उसका उद्धरण प्रस्तुत किया है।

'महाभारत' और 'मनु':— महाभारतमें मनुका २४ बार उल्लेख आया है। १६ में केवल 'मनु' नाम, १ में 'प्राचेतस् मनुके विचार राजधर्मके सम्बन्धमें, ७ में स्वायम्भुव मनुके स्मृति-सम्बन्धी उद्धरण आए हैं।

'श्रीमद् भगवद्गीता' में चार बार 'मनु' की चर्चा है।

वर्तमान सृष्टिके लिए मनुस्मृति मनु द्वारा घोषित विधि-संहिता है। श्री पं. मेधातिथिने अपने 'मनुस्मृति भाष्य' के प्रारम्भमें मनुके सम्बन्धमें लिखा है—

मनुर्नाम कश्चित् पुरुष विशेषोऽनेकवेदशाखाऽध्ययन विज्ञानानुष्ठान सम्पन्नः स्मृति-परम्परा प्रसिद्धः।

अर्थात्– 'मनु कोई पुरुष विशेष था जो वेदोंकी अनेक शाखाओंको पढकर धर्मानुष्ठान तथा स्मृति-परम्पराके लिए प्रसिद्ध हो गया।'

मनुस्मृतिका कर्ता कौन ?

क्या प्रचलित मनुस्मृतिके कर्ता मनुजी ही हैं? कुछ लोगोंका विचार है कि मनुस्मृतिमें मनुके विचार हैं, मनुके शब्द नहीं। जिसको लोग मनुस्मृति कहते हैं उसका नाम 'भृगु संहिता' है। कहते हैं कि भृगु और उनके शिष्योंने इसको श्लोक बद्ध किया। मनुस्मृतिमें भी लिखा है—

"एतद्वोऽयं भृगुः शास्त्रं श्रावयिष्यत्यशेषतः।
एतद्धि मत्तोऽधिजगे सर्वमेषोऽखिलं मुनिः॥ ५९॥
ततस्तथा स तेनोक्तो महर्षिर्मनुना भृगुः।
तानब्रवीदृषीन् सर्वान् प्रीतात्मा श्रूयतामिति॥६०॥"

[मनुस्मृति अ० १]

अर्थ ये भृगु मनु यह सम्पूर्ण शास्त्र आप लोगोंको सुनावेंगे; (क्योंकि) भृगुने इस सम्पूर्ण शास्त्रको मुझसे प्राप्त किया

---

२० 'वेदार्थ-दीपक निरुक्त भाष्य' पूर्वार्ध, प्रथमावृत्ति; पृष्ठ १६८

२१ वही, पृष्ठ १६८-१६९.

२२ 'निरुक्त शास्त्रम्, आचार्य तथा भाषाभाष्य, पृष्ठ १४७-१४८ [संवत् २०२१ वि में श्री रामलाल कपूर निक्षेपनिधि (ट्रस्ट) अमृतसर द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण.]

२३ 'निरुक्तम्' पृष्ठ ११९-१२० [सन् १९६३ में मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास, संस्कृत पुस्तकालय, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, २७३६ कूचा चेलां, दरियागंज, दिल्ली ६ द्वारा प्रकाशित]

है ॥ ५९ ॥ स प्रकार मनुसे आदेश प्राप्त किए हुए भृगुमुनिने प्रसन्नचित्त होकर उन महर्षियोंसे कहा-सुनिए ॥ ६० ॥ "

इन दोनों श्लोकोंको विद्वान् प्रक्षिप्त मानते हैं। वास्तवमें इन श्लोकोंके आगेपीछेके जो श्लोक हैं उनका चिन्तन करनेसे यह निश्चय करना कठिन है कि यह संहिता भृगुकी ही बनाई हुई है।

'मनुस्मृति' आजकल जिसरूपमें मिलती हैं कोई नवीन पुस्तक नहीं है।

महर्षि पातञ्जलिने अपने 'महाभाष्य' में पाणिनिऋषिके 'एकः पूर्वपरयोः' (अष्टा० ६।१।८४) सूत्रपर भाष्य करते हुए एक श्लोक दिया है—

'ऊर्ध्वं प्राणात्मुत्क्रामन्तियूनः स्थविर आयति।
प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यां पुनस्तान् प्रतिपद्यते।'

यह श्लोक ज्योंका त्यों 'मनुस्मृति' (अ० २ श्लो. १२०) में मिलता है। यद्यपि महाभाष्यमें 'मनु' का नाम नहीं है। परन्तु प्रतीत तो ऐसा ही होता है कि मनुस्मृतिका ही उद्धरण है।

श्री आद्यशङ्कराचार्यजीने अपने 'वेदान्तदर्शन भाष्य' में मनुस्मृतिके बहुतसे श्लोकोंका उल्लेख किया है। वेदान्तदर्शन ३।१।१४ 'स्मरन्तिच' सूत्रकी व्याख्यामें वे लिखते हैं:—

'मनु व्यास प्रभृतयः शिष्टाः।"

अर्थात् 'मनु, व्यास आदि शिष्ट पुरुषोंके कथन स्मृतिके अन्तर्गत आते हैं।

श्रीकुमारिलभट्टने 'मन्त्रार्थमुक्तावली' में 'मनुस्मृति' के पहले अध्यायके पहले श्लोककी व्याख्या करते हुए बृहस्पतिके श्लोक दिए हैं।

'अपरार्क' ने 'याज्ञवल्क्य स्मृति' के श्लोक २।२१ की व्याख्या करते हुए भी प्रथम श्लोकका उद्धरण दिया है।

'अश्वघोष' की 'वज्रसूची' में 'मानवधर्म' से कई श्लोक लिए गए हैं जो वर्तमान मनुस्मृतिके ही है।

अतः मनुस्मृति' के कर्ता 'मनु' जी ही थे।

मनुस्मृतिके काल:— मेधातिथि (९ वीं शती) एवं विश्वरूपने मनुस्मृतिका जो स्वरूप दिया है वह आज भी उपलब्ध है। बृहदारण्यकोपनिषद् (१।४।१७) में मनुका मत मिलता है। 'मृच्छकटिक' (९।३९) में मनुके आदेश पर निर्णय होता है। 'पांचवी शतीके आसपासके वल्लभी आदि शिलालेखोंमें मनुके आदेशपर निर्णय होता है।'[२४]

बृहस्पतिने मनुके लिए लिखा है कि वेदसे अधिक निकट होनेसे मनुका सर्वाधिक प्रामाण्य है।'[२५]

इन उद्धरणोंसे इतना तो सिद्ध होता है कि द्वितीय शताब्दीतकके ग्रन्थोंमें मनुस्मृतिका उद्धरण दिया गया हैं।

पं० भगवद्दत्तजी बी. ए. का मतः— 'अतः वर्तमान मनुस्मृतिको ईसाकी प्रथम शतीमें मानना ठीक नहीं। अपितु मनुस्मृतिके वर्तमान पाठमें भी शतशः प्रयोग पाणिनिसे पूर्वकालकी लोक भाषाके है। वे प्रयोग बताते हैं कि वर्तमान मनुस्मृति भी अति प्राचीन ग्रन्थ हैं। इससे यह भी सिद्ध होता है कि पाश्चात्योंका कथित भाषा-विज्ञान अधिकांश असत्य है।'[२६]

पं. भगवद्दत्तजी बी. ए. ने बार्हस्पत्य अर्थसूत्रकी भूमिकामें लिखते हैं कि 'धम्मपद' लगभग चौथी शताब्दी ई. पू. में लिखा गया था उसमें दो श्लोक थोडेसे परिवर्तनके साथ मनुस्मृतिके श्लोकोंके अनुसारही है।[२७]

मनुस्मृति

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्त आयुर्विद्या यशोबलम्॥
(२।१२१)

न तेन वृद्धो भवति येनास्यपलितं शिरः।
यो वै युवाऽप्यधीयानस्तं देवाः स्थविरं विदुः॥
(२।१५६)

धम्मपद

अभिवादन शीलस्य निच्चं वद्धापचायिनो
चत्तारो धम्मा वड्ढन्ति आयु वण्णो सुखं बलं
॥ १०९ ॥ सहस्सवग्गो

न तेन थेरो येन स्सफलितं सिरो परिपक्को
वयोजस्स मोघं जिण्णोति वुच्चति ॥ २०६
धम्मट्ठवग्गो

२४ 'ए. इं. जिल्द ८, पृष्ठ ३०३, जिल्द ४, पृष्ठ १०५.
२५ मनुस्मृति १।१ पर पं. कुल्लूक भट्ट द्वारा उद्धृत बृहस्पतिवचनम्।
२६ 'भारतवर्षका वृद्ध इतिहास' द्वितीय भाग, पृष्ठ २९ [संवत २०१७ दिल्ली, प्रथम संस्करण]
२७ 'Barhaspatya Sutra' Editedby Dr. F. W. Thomas, the Devanagari text prepared from hisedition (in Roman Script) 1921 Intro. p. 5. तुलना करो. डा. लक्ष्मीदत्त ठाकुर कृत 'प्रमुख स्मृतियोंका अध्ययन' पृष्ठ २५ [सन् १९६५ में हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तरप्रदेश, लखनऊ द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण]

इन सबसे यह निष्कर्ष निकलता है :-

(१) वर्तमान मनुस्मृतिका स्वरूप ई. द्वितीय शताब्दी पूर्व तकका हो सकता है इसे अब विशिष्ट विद्वानोंने मान लिया है।

(२) श्री डा. काशी प्रसाद जायसवालने यह सिद्ध कर दिया है कि उसकी सीमा ईसवीसन्से पूर्वही है।

(३) श्री जायसवालजीने 'हिन्दू पॉलिटी' (Hindu Polity) पृष्ठ २३५–२३९ में पुष्यमित्र आदि शुंगवंशीय राजाओंके कालमें सिद्ध किया है परन्तु डा. लक्ष्मीदत्त ठाकुर[२८] व श्री वरदाचार्यजी व श्री आचंगरने इस मतका प्रबलरूपसे खण्डन कर दिया है।

(४) श्री आयंगरजी उसे कौटिल्यसे पूर्वका सिद्ध करते हैं परन्तु यह लिखते हैं कि कमसे कम द्वितीय ईसवी शताब्दी से पूर्वका होना निर्विवाद है।

(५) मनुस्मृतिने यास्कका उल्लेख नहीं किया है परन्तु यास्कने मनुका उल्लेख किया है। श्री काणेके अनुसार यास्कका काल ८०० ई. के है। श्री भंडारकरके अनुसार ७५० ई० पू० तथा आयंगरजीके अनुसार ६५० ई० पू० है। यास्कने मनुका कई स्थानोंपर उल्लेख किया है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि मनुके धर्मशास्त्र की स्थिति यास्कके पूर्व थी।

(६) पं. भगवद्दत्तजी बी. ए. ने निश्चित तिथि नहीं दी है परन्तु वे उसे कौटिल्यसे तथा धम्मपदसे पूर्व की मानते हैं। धम्मपदकी रचना वे लगभग चौथी शताब्दी ई० पू० मानते हैं। अतः इनके मतसे मनुस्मृतिका काल उससे भी पूर्वका सिद्ध होता है। उन्होंने मनुस्मृतिकी रचना रामायणसे पूर्व मानी है। ऐसी स्थितीमें अनायासही मनुस्मृतिकी रचना-काल ई. छठी या पांचवी शताब्दी पूर्व हो जाता है। यही मत मॅक्समूलर महोदयका मनुस्मृतिकी रचनाका काल उससे भी पूर्व हो सकता है।

अतः 'मनुस्मृति' प्राचीन है।

मनुस्मृतिकी श्लोक संख्या– 'शान्तिपर्व (५८–८०–८५) ने बताया है कि किस प्रकार ब्रह्माने धर्म, अर्थ, एवं काम पर एक लाख अध्याय लिखे और वह महाग्रन्थ कालान्तरमें विशालाक्ष 'इन्द्र, बाहुदन्तक, बृहस्पति एवं काव्य (उशना) द्वारा क्रमसे १०, ०००, ५, ०००, ३, ००० एवं १, ००० अध्यायोंमें संक्षिप्त किया गया। नारद- स्मृतिमें आया है कि मनुने १, ००, ००० श्लोकों, १०८० अध्यायों एवं २४ प्रकरणोंमें एक धर्मशास्त्र लिखा और उसे नारदको पढाया जिसने उसे १२, ००० श्लोकोंमें संक्षिप्त किया और मार्कण्डेयको पढाया। मार्कण्डेयने भी इसे ८, ००० श्लोकोंमें संक्षिप्त कर सुमति भार्गवको दिया, जिन्होंने स्वयं उसे ४, ००० श्लोकोंमें संक्षिप्त किया।...

वर्तमान मनुस्मृतिमें १२ अध्याय एवं २६९४ श्लोक हैं[२९]

चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी द्वारा प्रकाशित 'मनुस्मृति' श्री कुल्लूक भट्ट प्रणीत 'मन्वर्थ मुक्तावली' टीकामें १२ अध्याय श्लोक २६८४ ही हैं– देखिए—

अध्याय	श्लोक संख्या	प्रक्षिप्त श्लोक
१	११९	११
२	२४९	११
३	२८६	२१
४	२६०	१९
५	१६९	२२
६	९७	६
७	२२६	१६
८	४२०	३०
९	३३६	६
१०	१३१	२
११	२६५	१४
१२	१२६	१२
	२६८४ +	१७०

इस प्रकार श्रीकाणे और पं. कुल्लूक भट्टकृत टीकामें १० श्लोकोंका अन्तर है। पं. कुल्लूक भट्टकी टीकामें १७० श्लोक प्रक्षिप्त है जब कि पं. हरगोविन्द शास्त्रीने अपनी

२८ वही पृष्ठ १७–१८

२९ 'धर्मशास्त्रका इतिहास' प्रथम भाग (श्रीकाणेकृत) पृष्ठ ४२–४३.

+ तुलना करो. सन् १९४६ ई. में निर्णयसागर मुद्रण मन्त्रालय २६–२८ कोलभट्ट स्ट्रीट, बम्बई द्वारा प्रकाशित, दशम संस्करण मनुस्मृति पर श्री कुल्लूक भट्ट कृत टीका। पं. हरगोविन्द शास्त्री, व्याकरण साहित्याचार्य कृत 'मनुस्मृति सविमर्श 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका, (सन् १९६५ ई. चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, द्वितीय संस्करण)

टीकामें १७५ प्रक्षिप्त श्लोकोंकी सूची दी है। ये तो पौराणिकोंके विचार हैं।

आर्यजगत्के प्रसिद्ध विद्वान्, सामवेद भाष्यकार पं. तुलसीरामजी स्वामीने भी २६८४ श्लोकोंकी टीका की है परन्तु वे टीकाके साथ २ ही प्रक्षिप्त श्लोकोंको भी बतलाते गए हैं। पं. हरिश्चन्द्र विद्यालंकार भी प्रायः २६८४ श्लोक मानते हैं। अतः भीकाणे की संख्या अशुद्ध प्रतीत होती है।

'मनुस्मृति' में परस्पर विरोधी मतः— ब्राह्मणको शूद्राके साथ विवाहका विधान (मनु. ३-१२-१३) और निषेध (मनु. ३-१४-१९) दोनों है। एक स्थान पर नियोगका समर्थन (मनु. ९-५९-६३) है और दूसरे स्थान पर उसे पशुधर्म (मनु. ९-६४-६८) कहा गया है। श्राद्ध एवं मधुपर्कमें मांसका विधान (मनु. ५-३१, ३२, ३५, ३९, ४१) है और सर्वत्र मांस- प्रयोगका निषेध (मनु. ५-४८-५०) है। एक श्लोकमें पिता आचार्यसे श्रेष्ठ और दूसरेमें आचार्य पितासे श्रेष्ठ (मनु. २-१४५) कहा गया है।

स्पष्ट क्षेपकः मनु. ३-६८ में गृहस्थके पांच ऐसे पातकोंका उल्लेख है जो प्रत्येक गृहस्थीको बिना जाने-बूझे करने पड़ते हैं जैसे चूल्हा, चक्की, झाड़ू ओखली और जलका घट इनके प्रयोगसे छोटे छोटे कीड़े दबकर मर जाते हैं।

इन दोषोंको मिटानेके लिए दैनिक प्रायश्चितके रूपमें (मनु. ३-६९,७०) में पञ्चमहायज्ञ करनेका उल्लेख है। मनुस्मृति कहती है कि 'नृयज्ञ' का अर्थ 'अतिथि पूजन' है फिर भी लोग 'यज्ञ' हिंसापरक समझने लगे। 'यज्ञ' को निघण्टुमें 'अध्वर' कहा गया है। 'अ' नहीं, 'ध्वर' में हिंसा = हिंसारहित इससे प्रतीत होता है कि 'यज्ञ' हिंसारहितही होना चाहिए। 'बलि' का अर्थ 'भूतयज्ञ' है अर्थात् चींटी, कौवे आदिको भोजन पहुँचाना। इसीलिए पितृयज्ञमें पशुहिंसाका विधान स्पष्टतया पीछेकी मिलावट है। यज्ञमें पशुहिंसा वाममार्गका सिद्धान्त है, वैदिक मत नहीं है।

श्राद्ध व तर्पण— 'पितृयज्ञस्तुतर्पणम्।' (मनु. ३।७०) 'पितृयज्ञ' को तर्पण कहते हैं। पौराणिक यह समझते हैं कि तर्पण मृत पितरोंको पानी देनेका नाम है। मनुजीके इस श्लोकसे तो 'मृतपितरों' को गंध नहीं पाई जाती। इसी श्लोकका भाष्य करते हुए पं. कुल्लूकभट्ट लिखते हैं— 'अन्नाद्येनोदकेन वा' (३।८२) इति तर्पणं वक्ष्यति स पितृयज्ञः' = अन्न और पानी देनेको तर्पण कहते हैं वही पितृयज्ञ है। भाष्यमें 'वक्ष्यति' (आगे कहेंगे। लिखा है। वह श्लोक यह है—

'कुर्यादहरहः श्राद्धमन्नाद्येनोदकेन वा।
पयो मूल फलैर्वापि पितृभ्यः प्रीतिमावहन्।
(मनु० ३।८२)

अर्थात् 'पितरोंको प्रीतिपूर्वक बुलाकर अन्न, जल, दूध मूल, फलसे प्रतिदिन श्राद्ध करे।'

जीवित पितरोंकोही प्रतिदिन बुलाकर श्रद्धापूर्वक उनकी अन्नजलादिसे सेवा कर सकता है, मृत पितरोंको नहीं। इन दोनों श्लोकों और पं. कुल्लूकभट्टकी टिप्पणीको देखकर प्रतीत होता है कि जिसको 'तर्पण' कहते हैं वही श्राद्ध है। मनु० ३।८३ श्लोक पीछेसे मिलाए गए हैं।

'मनुस्मृति' के भाष्यकारः—

'मनुस्मृति' पर असहाय, देवस्वामी, भर्तृयज्ञ और भागुरिके भाष्य[30] असहायकी मनुटीकाकी ओर 'सरस्वती विलास', 'विवादरत्नाकर' और 'मेधातिथि' संकेत करते हैं। असहायका काल सप्तम शताब्दी ई० पू० रखा जा सकता है।

मेधातिथि, गोविन्दराज, कुल्लूक भट्ट, नन्दपण्डित, सर्वज्ञनारायण, राघवानन्द, रामानन्द, प्रसिद्ध भाष्यकार हैं।

मेधातिथिका भाष्य कलकत्तेसे मोर संस्करण प्रकाशित हुआ है।

आधुनिक टीकाकारः— विद्यावारिधि पं. ज्वाला प्रसाद मिश्र, मुरादाबादीकी हिन्दी टीका श्री वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बईसे प्रकाशित हुआ था।

पं. कुल्लूकभट्टका संस्कृतभाष्य व हिन्दी अनुवाद इस समय भी प्राप्य है। पं० श्री हरगोविन्द शास्त्री, साहित्याचार्य, व्याकरणाचार्य कृत मनुस्मृतिकी 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका वाराणसीसे प्रकाशित है।

आर्यसमाजी विद्वानोंकी हिन्दी टीकायें— महामहोपाध्याय पं० आर्यमुनिजी, पं० राजारामशास्त्री, पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम०ए०, पं० चन्द्रमणिजी विद्यालङ्कार, पालीरत्न, पं० सत्यकामजी सिद्धान्तशास्त्री, एम० ए०, स्वामी दर्शनानन्दजी सरस्वती, म० मुन्शीरामजी (स्वामी श्रद्धानन्दजी); श्री ईश्वरीप्रसादजी 'प्रेम' एम० ए०; पं० तुलसीरामजी स्वामी, पं० हरिश्चन्द्रजी 'विद्यालङ्कार'; पं० भीमसेन शर्मा (संस्कृत व हिन्दी भाष्य); पं० देवदत्तशास्त्री

---

३० पं. भगवद्दत्तजी बी० ए० कृत 'भारतवर्षका बृहद् इतिहास' द्वितीयभाग, पृष्ठ २९

पं० गङ्गा प्रसाद उपाध्याय एम० ए० की कतिपय अनधिकार चेष्टा–

पं० गङ्गा प्रसाद उपाध्याय एम ए. का 'मनुस्मृति' [भूमिका और हिन्दी अनुवादसहित शुद्ध, परिष्कृत संस्करण] कला प्रेस, इलाहाबादमें मुद्रित व प्रकाशित है। पुस्तक किस संवत्, सन्में मुद्रित हुई, कौनसा संस्करण है इसका कोई उल्लेख नहीं है; पर यह प्रथम संस्करही है। १४९ पृष्ठकी भूमिका है।

आपने इसमें मनमाने ढंगसे श्लोकोंका कतर-ब्योंत किया है। जिन श्लोकोंको महर्षि दयानन्दजी सरस्वतीने माना है उनको भी आपने अपने परिष्कृत संस्करणमें नहीं माना है और निकाल दिया है। यह धींगामुश्ती नहीं तो क्या है? देखिए:–

'आपो नाम इति...' (मनु० १।१०) सत्यार्थ प्रकाश, समु० १

'यमान् सेवेत...' (मनु० ४।२०४) सत्यार्थ प्र० समु० ३

'वैश्वदेवस्य सिद्धस्य...' (मनु० ३।८४) सत्यार्थ प्र० स० ४

'...स्विष्टकृते...' (मनु० ३।८६) सत्यार्थ प्रकाश समु० ४

'...भूतश्योनक्तञ्चारिभ्य...' (मनु० ३।९०) सत्यार्थ प्र० समु० ४

'...तामनेन विधानेन निजो...' (मनु० ९।६९) सत्यार्थ प्र० समु० ४

'वन्ध्याष्टमेऽधिवेद्यान्दे दशमे...' (मनु. ९।८१) सत्यार्थ प्र. समु. ४

'प्राणायामा ब्राह्मणस्यत्रयोऽपि...' (मनु. ६।७०) स. प्र. स. ५

'उच्चावचेषु भूतेषु ...' (मनु. ६।७३) स. प्र. स. ५

'अहिंसयेन्द्रियासंगैर्वैदिकैश्चैव...' (मनु. ६।७५) सत्यार्थ प्र. स. ५

'एषवोऽभिहितो धर्मो...' (मनु. ६।९७) स. प्र स. ५

'त्रैविद्येभ्यस्त्रयीं विद्यां दण्डनीतिं...' (मनु. ७।४३) स. प्र. स. ६.

'आदानमप्रियकरं दानञ्च प्रियकारकम्...' (मनु. ७।२०४) स. प्र. स. ६.

'यस्य विद्वान् हि वदतः क्षेत्रज्ञो नाभिशङ्कते...' (मनु. ८।९६) स. प्र. स. ६.

'उपस्थमुदरं जिह्वा हस्तौ...' (मनु. ८।१२५) स. प्र. स. ६.

'येन येन यथाङ्गेन...' (मनु. ८।३३४) स. प्र. स. ६

'कार्षापणं भवेद्दण्ड्यो...' (मनु. ८।३३६) स. प्र. स. ६.

'ब्राह्मणस्य चतुः षष्टि...' (मनु. ८।३३८) स. प्र. स. ६.

'अष्टापाद्यं तु शूद्रस्य...' (मनु. ८।३३७) स. प्र. स. ६.

'ऐन्द्रं स्थानमभि...' (मनु. ८।३४४) स. प्र. स. ६.

'वाग्दुष्टा...' (मनु. ८।३४५) स. प्र. स. ६.

'भर्तारं लङ्घयेद्या तु स्त्री...' (मनु. ८।३७१) स. प्र. स. ६.

'पुमांसं दाहयेत्पापं शयने...' (मनु. ८।३७२) स. प्र. स. ६.

'अहन्यहन्यवेक्षेत...' (मनु. ८।४१९) स. प्र. स. ६.

'सर्वे ते दस्यव स्मृताः' (मनु. १०।४५) स. प्र. स. ८.

'देवत्वं सात्त्विका यान्ति...' (मनु. १२।४०) स. प्र. स. ९

इसी प्रकार मनु. १२ श्लो. ४२; ४३, ४४; ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०,) स. प्र. स. ९

'अभक्ष्याणि द्विजातीनाम...' (मनु. ५।५) स. प्र. स. १०

इस प्रकार ३६ श्लोकोंको महर्षि दयानन्दजीने शुद्ध मानकर 'सत्यार्थ–प्रकाशमें' में स्थान दिया है पर उपाध्यायजीने उनको नहीं माना है। क्या उपाध्यायजी महर्षि दयानन्दजी सरस्वतीसे अधिक विद्वान् थे? अपने मान्य आचार्यजी की उन्होंने क्यों उपेक्षा की यह तो वही जानें।

स्वामी श्रद्धानन्दजीने 'वेदानुकूला संक्षिप्त मनुस्मृतिः' संवत् १९६६ वि. में गुरुकुलकाङ्गडीसे प्रकाशित करवाई थी। यह गुरुकुलके विद्यार्थियोंके उपयोगार्थ हैं।

स्वामी दर्शनानन्दजी सरस्वतीकी 'मनुस्मृति (सरल भाषा टीका)' संवत् २०१५ वि. में पुस्तक मन्दिर, मथुरा द्वारा प्रकाशित है, द्वितीयावृत्ति है। यह टीका वैदिक दृष्टिकोणसे अच्छी नहीं है।

पं. तुलसीरामस्वामीने 'मनुस्मृति' का हिन्दी अनुवाद सन् १९१२ ई में प्रकाशित किया था। स्वामीजीने प्रक्षिप्त श्लोकोंको अलग न करके अनुवाद कर दिया है पर ब्राईकेटमें उनको प्रक्षिप्त लिख दिया है। यह पद्धति अच्छी नहीं है।

पं. चन्द्रमणि विद्यालङ्कार, पालीरत्न की 'आर्ष मनुस्मृति' भास्कर प्रेस, देहरादूनसे प्रकाशित हुई थी। इसकी द्वितीयावृत्ति मेरे सामने है। आपने उन्हीं श्लोकोंको लिखा है जिनको महर्षि दयानन्दजीने माना है।

पं. सत्यकाम सिद्धान्त शास्त्री, एम. ए. द्वारा सम्पादित 'वैदिक मनुस्मृति' (टीका सहित) सन् १९६० ई. में देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली ६ से प्रकाशित है। इसका तृतीय संस्करण मेरे सामने है। आपने महर्षि दयानन्दजीके माने हुए श्लोकोंको ही दिया है।

पं. हरिश्चन्द्रजी 'विद्यालङ्कार' कृत 'मनुस्मृति (संपूर्ण मूल संस्कृत और आर्य भाषानुवाद तथा टिप्पणियों-सहित) वि. संवत् २०१९ में वैदिक धर्मशास्त्र प्रकाशन संस्था, दिल्ली द्वारा प्रकाशित है। आपने किसी श्लोकको नहीं निकाला है वरन् सभी श्लोकोंकी टीका कर दी है, प्रक्षिप्त श्लोकों पर टिप्पणी दी है। यह पद्धति अच्छी है।

इसप्रकार 'मनुस्मृतिका सर्वेक्षण' पूरा हुआ।
